अल्लामा

इक़बाल

बच्चों के लिये नज़्में

संकलन एवं लिपयांतर : फ़ज़ल ताबिश

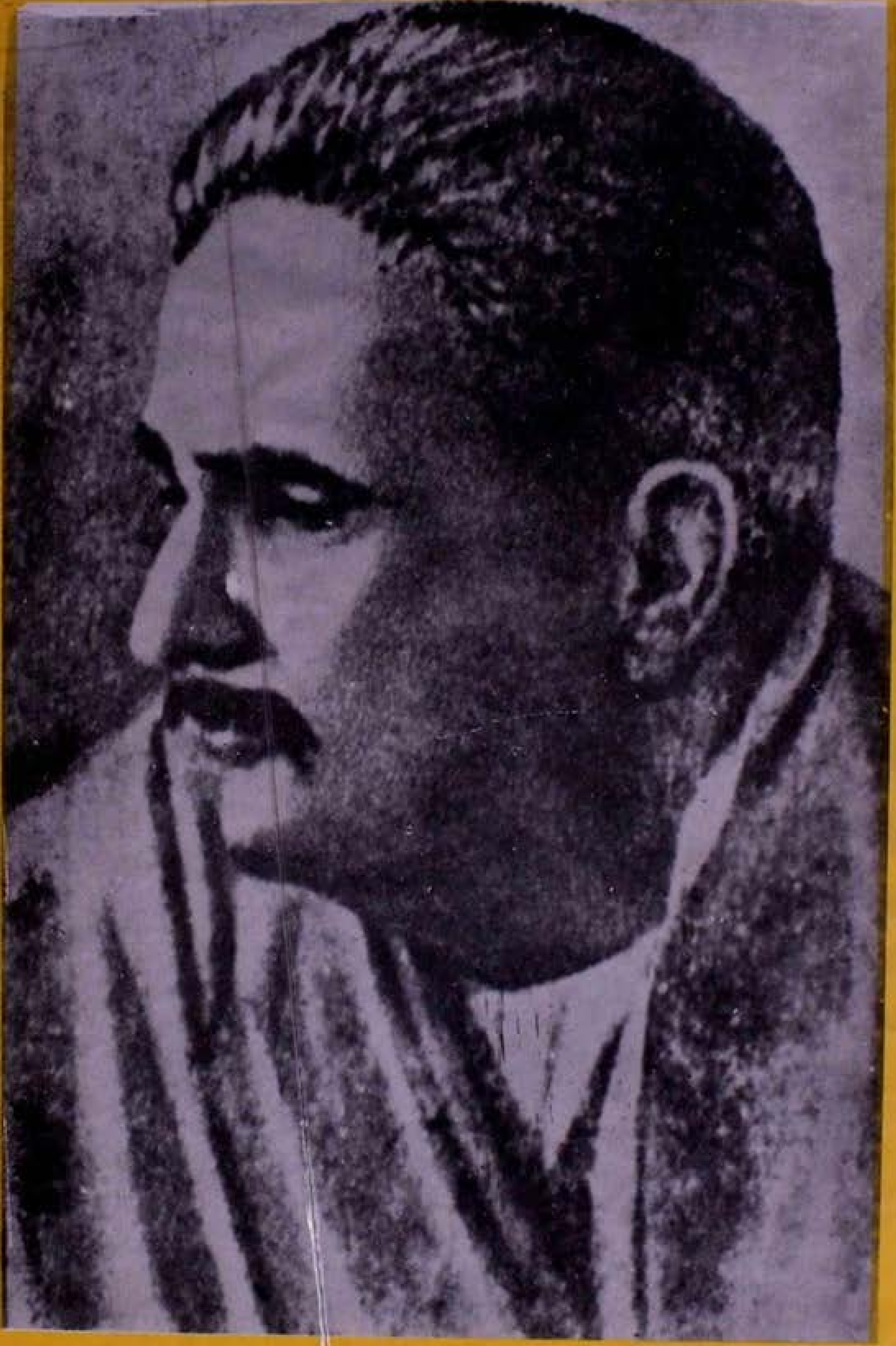

علامہ اقبال

بچّوں کے لیے نظمیں

انتخاب اور دیوناگری فضل تابش

अल्लामा इक़बाल

बच्चों के लिये नज़्में

संकलन एवं लिपयांतर : फ़ज़ल ताबिश

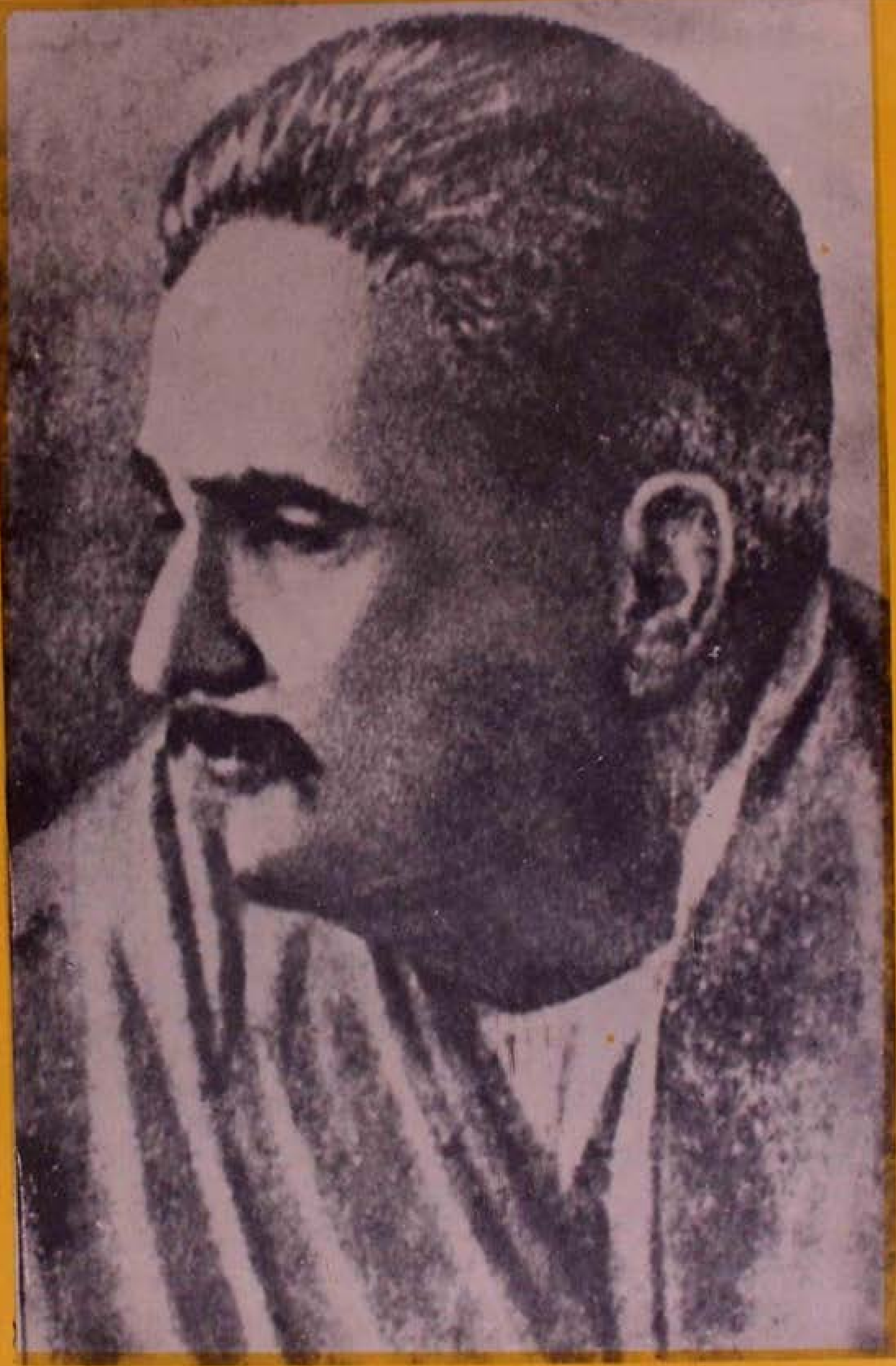

علامہ اقبال

بچوں کے لیے نظمیں

انتخاب اور دیوناگری فضل تابش

बच्चे की दुआ

بچّے کی دعا

लब[1] पे आती है दुआ बन के तमन्ना[2] मेरी
ज़िन्दगी शम्मा[3] की सूरत हो खुदाया[4] मेरी

दूर दुनिया का मिरे दम से अंधेरा हो जाये
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाये

हो मिरे दम से यूँ ही मेरे वतन की ज़ीनत[5]
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत

ज़िन्दगी हो मिरी परवाने की सूरत या-रब[6]
इल्म[7] की शम्मा से हो मुझको मोहब्बत या-रब

हो मिरा काम ग़रीबों की हिमायत करना
दर्दमन्दों से ज़ईफ़ों[8] से मोहब्बत करना

मेरे अल्लाह! बुराई से बचाना मुझको
नेक जो राह हो, उस रह पे चलाना मुझको

(अंग्रेजी से)

لب پہ آتی ہے دعا بن کے تمنا میری
زندگی شمع کی صورت ہو خدایا میری

دُور دنیا کا مرے دم سے اندھیرا ہو جائے
ہر جگہ میرے چمکنے سے اجالا ہو جائے

ہو مرے دم سے یونہی میرے وطن کی زینت
جس طرح پھول سے ہوتی ہے چمن کی زینت

زندگی ہو مری پروانے کی صورت یارب
علم کی شمع سے ہو مجھ کو محبت یارب

ہو مرا کام غریبوں کی حمایت کرنا
دردمندوں سے ضعیفوں سے محبت کرنا

میرے اللہ ! برائی سے بچانا مجھ کو
نیک جو راہ ہو اس راہ پہ چلانا مجھ کو

(ماخوذ از ولیم کوپر)

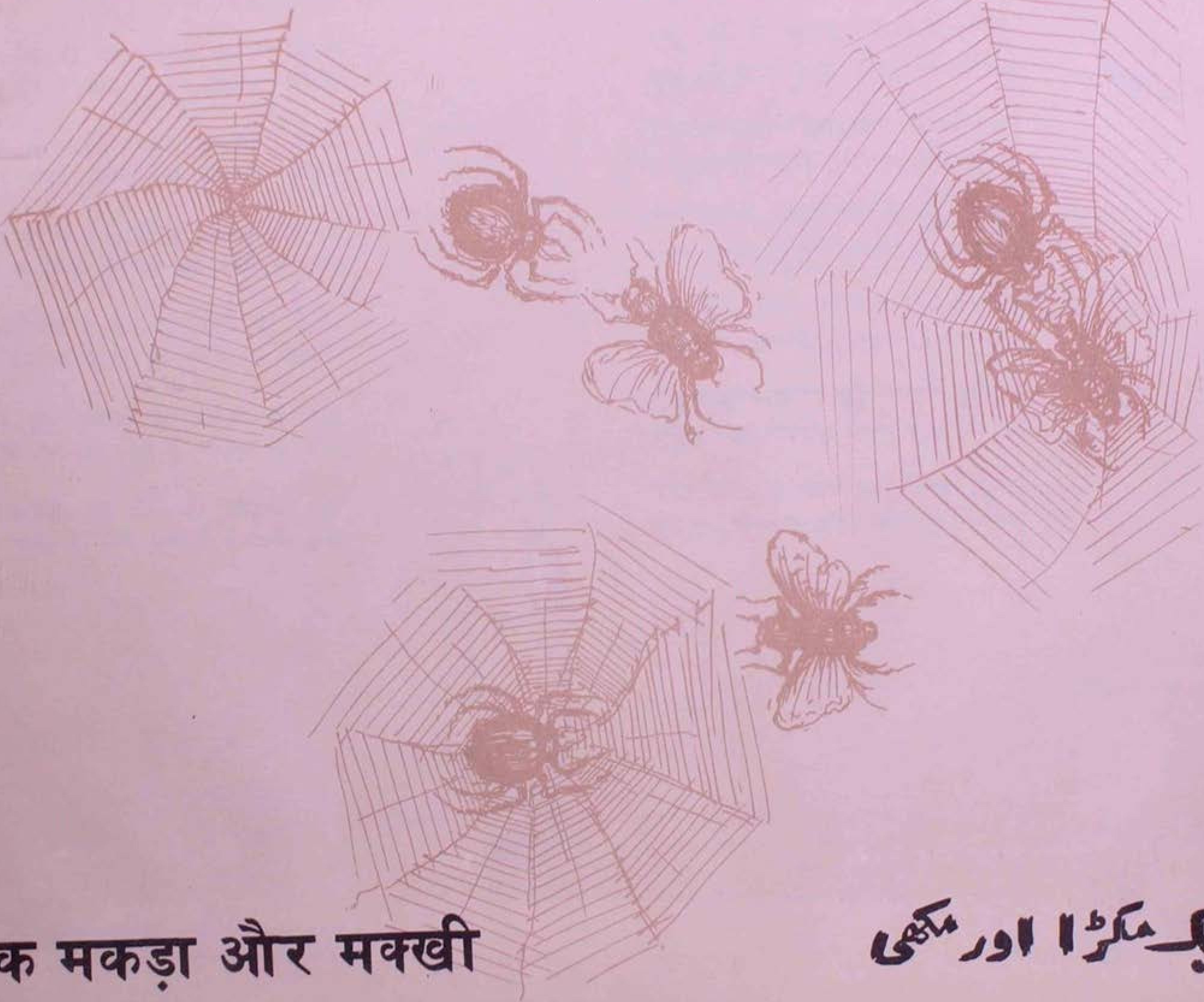

एक मकड़ा और मक्खी

ایک مکڑا اور مکھی

इक दिन किसी मक्खी से ये कहने लगा—मकड़ा
इस राह से होता है गुज़र रोज़ तुम्हारा

लेकिन मिरी कुटिया की न जागी कभी क़िस्मत
भूले से कभी तुम ने यहाँ पाँव न रक्खा

ग़ैरों से न मिलिये तो कोई बात नहीं है
अपनों से मगर चाहिये यूँ खिंच के न रहना

आओ जो मिरे घर में तो इज़्ज़त है ये मेरी
वह सामने सीढ़ी है जो मंज़ूर हो आना

मक्खी ने सुनी बात जो मकड़े की तो बोली
हज़रत! किसी नादान को दीजेगा यह धोका!

इस जाल में मक्खी कभी आने की नहीं है
जो आप की सीढ़ी पे चढ़ा, फिर नहीं उतरा

मकड़े ने कहा: वाह! फरेबी मुझे समझे
तुम-सा कुई नादान ज़माने में न होगा

मंज़ूर तुम्हारी मुझे ख़ातिर थी, वगर्ना,
कुछ फ़ायदा अपना तो मिरा इस में नहीं था

उड़ती हुई आई हो ख़ुदा जाने कहाँ से
ठहरो जो मिरे घर में तो है इस में बुरा क्या?

इस घर मैं कई तुम को दिखाने की हैं चीज़ें
बाहर से नज़र आता है छोटी सी यह कुटिया

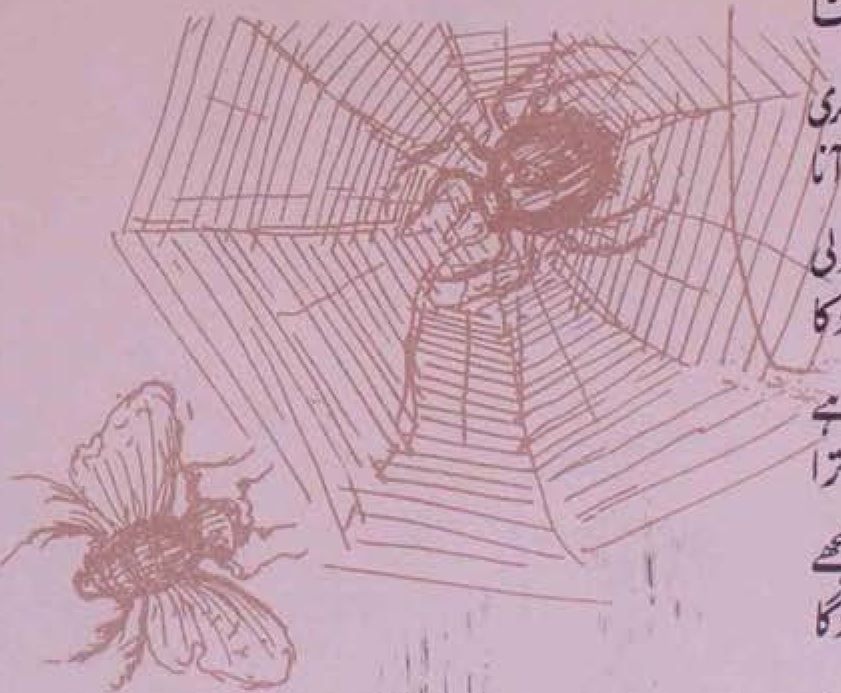

اک دن کسی مکھی سے یہ کہنے لگا مکڑا
اس راہ سے ہوتا ہے گذر روز تمہارا

لیکن مری کٹیا کی نہ جاگی کبھی قسمت
بھولے سے کبھی تم نے یہاں پاؤں نہ رکھا

غیروں سے نہ ملیے تو کوئی بات نہیں ہے
اپنوں سے مگر چاہیے یوں کھنچ کے نہ رہنا

آؤ جو مرے گھر میں تو عزت ہے یہ میری
وہ سامنے سیڑھی ہے جو منظور ہو آنا

مکھی نے سنی بات جو مکڑے کی تو بولی
حضرت کسی نادان کو دیجے گا یہ دھوکا

اس جال میں مکھی کبھی آنے کی نہیں ہے
جو آپ کی سیڑھی پہ چڑھا پھر نہیں اترا

مکڑے نے کہا واہ ! فریبی مجھے سمجھے
تم سا کوئی نادان زمانے میں نہ ہوگا

منظور تمہاری مجھے خاطر تھی وگرنہ
کچھ فائدہ اپنا تو مرا اس میں نہیں تھا

اڑتی ہوئی آئی ہو خدا جانے کہاں سے
ٹھہرو جو مرے گھر میں تو ہے اس میں برا کیا

اس گھر میں کئی تم کو دکھانے کی ہیں چیزیں
باہر سے نظر آتا ہے چھوٹی سی یہ کٹیا

लटके हुए दरवाज़ों पे बारीक हैं परदे
दीवारों को आईनों से है मैंने सजाया

मेहमानों के आराम को हाज़िर हैं बिछोने
हर शख़्स को सामां यह मयस्सर नहीं होता

मक्खी ने कहा: ख़ैर! यह सब ठीक है लेकिन
मैं आपके घर आऊँ, यह उम्मीद न रखना

इन नर्म बिछोनों से ख़ुदा मुझको बचाये
सो जाये कोई इन पे तो फिर उठ नहीं सकता

मकड़े ने कहा दिल में, सुनी बात जो उसकी
फाँसूँ इसे किस तरह यह कमबख़्त है दाना[2]

सौ काम ख़ुशामद से निकलते हैं जहाँ में
देखो जिसे दुनिया में ख़ुशामद का है बन्दा

यह सोच के मक्ख़ी से कहा उसने बड़ी बी
अल्लाह ने बख़्शा है बड़ा आपको रुतबा[3]

होती है उसे आपकी सूरत से मोहब्बत
हो जिसने कभी एक नज़र आपको देखा

आँखें हैं कि हीरे की चमकती हुई कनयाँ
सर आपका अल्लाह ने कलग़ी से सजाया

ये हुस्न, ये पोशाक, ये ख़ूबी, ये सफ़ाई!
फिर इस पे क़यामत है यह उड़ते हुये गाना

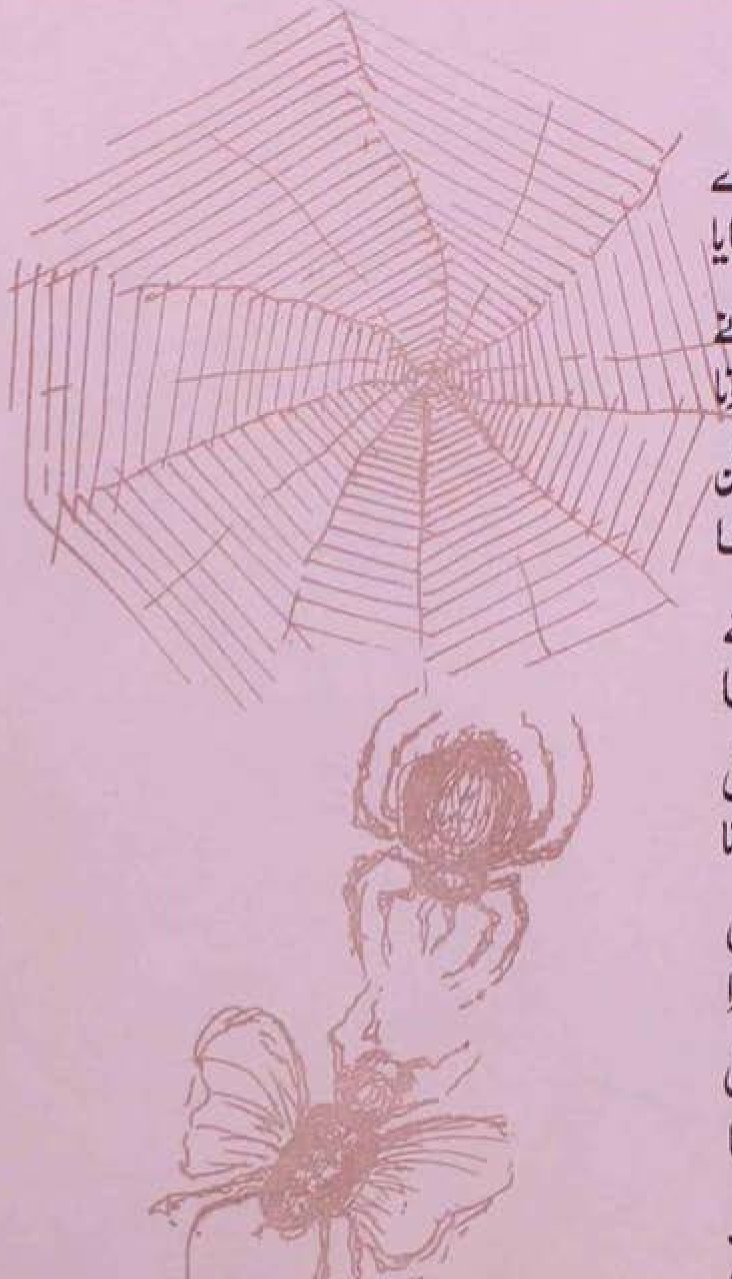

لٹکے ہوئے دروازوں پہ باریک ہیں پردے
دیواروں کو آئینوں سے ہے میں نے سجایا

مہمانوں کے آرام کو حاضر ہیں بچھونے
ہر شخص کو ساماں یہ میسّر نہیں ہوتا

مکھی نے کہا خیر! یہ سب ٹھیک ہے لیکن
میں آپ کے گھر آؤں یہ اُمید نہ رکھنا

ان نرم بچھونوں سے خدا مجھ کو بچائے
سو جائے کوئی ان پہ تو پھر اُٹھ نہیں سکتا

مکڑے نے کہا دل میں سُنی بات جو اس کی
پھانسوں اسے کس طرح یہ کمبخت ہے دانا

سَو کام خوشامد سے نکلتے ہیں جہاں میں
دیکھو جسے دنیا میں خوشامد کا ہے بندا

یہ سوچ کے مکھی سے کہا اس نے بڑی بی
اللہ نے بخشا ہے بڑا آپ کو رُتبا

ہوتی ہے اُسے آپ کی صورت سے محبت
ہو جس نے کبھی ایک نظر آپ کو دیکھا

آنکھیں ہیں کہ ہیرے کی چمکتی ہوئی کنیاں
سر آپ کا اللہ نے کلغی سے سجایا

یہ حُسن، یہ پوشاک، یہ خوبی، یہ صفائی
پھر اس پہ قیامت ہے یہ اڑتے ہوئے گانا

मक्ख़ी ने सुनी जब यह ख़ुशामद तो पसीजी
बोली कि नहीं आपसे मुझको कोई खटका

इन्कार की आदत को समझती हूँ बुरा मैं
सच ये है कि दिल तोड़ना अच्छा नहीं होता

ये बात कही और उड़ी अपनी जगह से
पास आई तो मकड़े ने उछल कर उसे पकड़ा

भूखा था कई रोज़ से अब हाथ जो आई
आराम से घर बैठ के मक्खी को उड़ाया

(अंग्रेजी से)

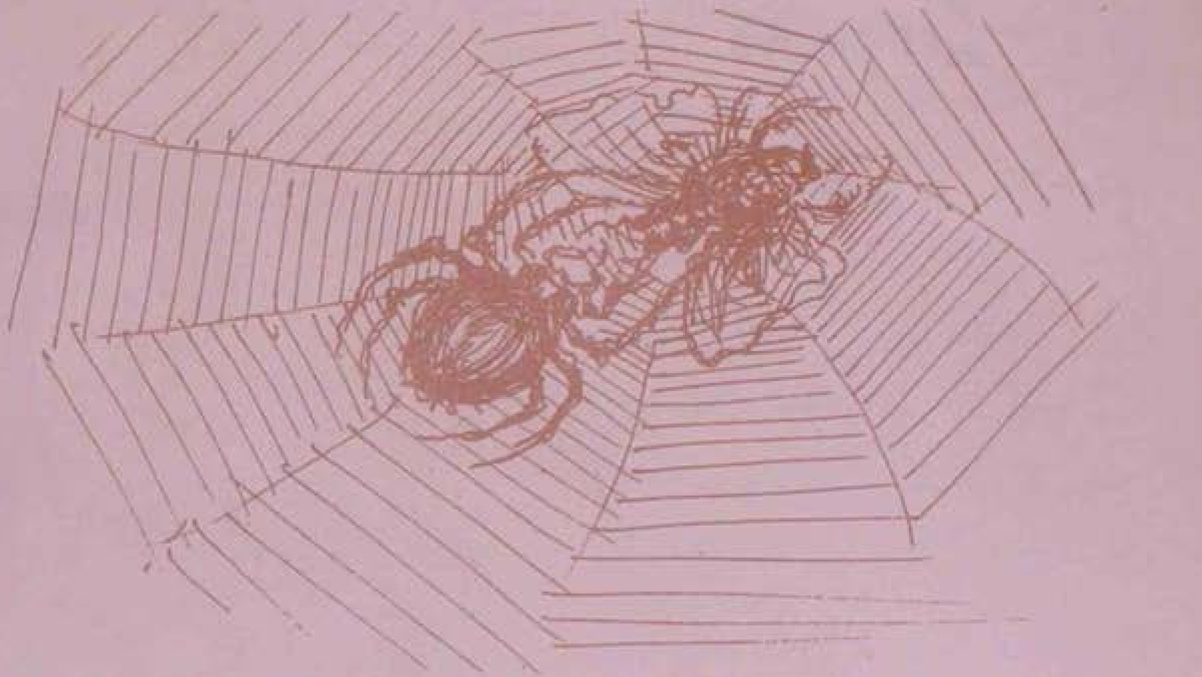

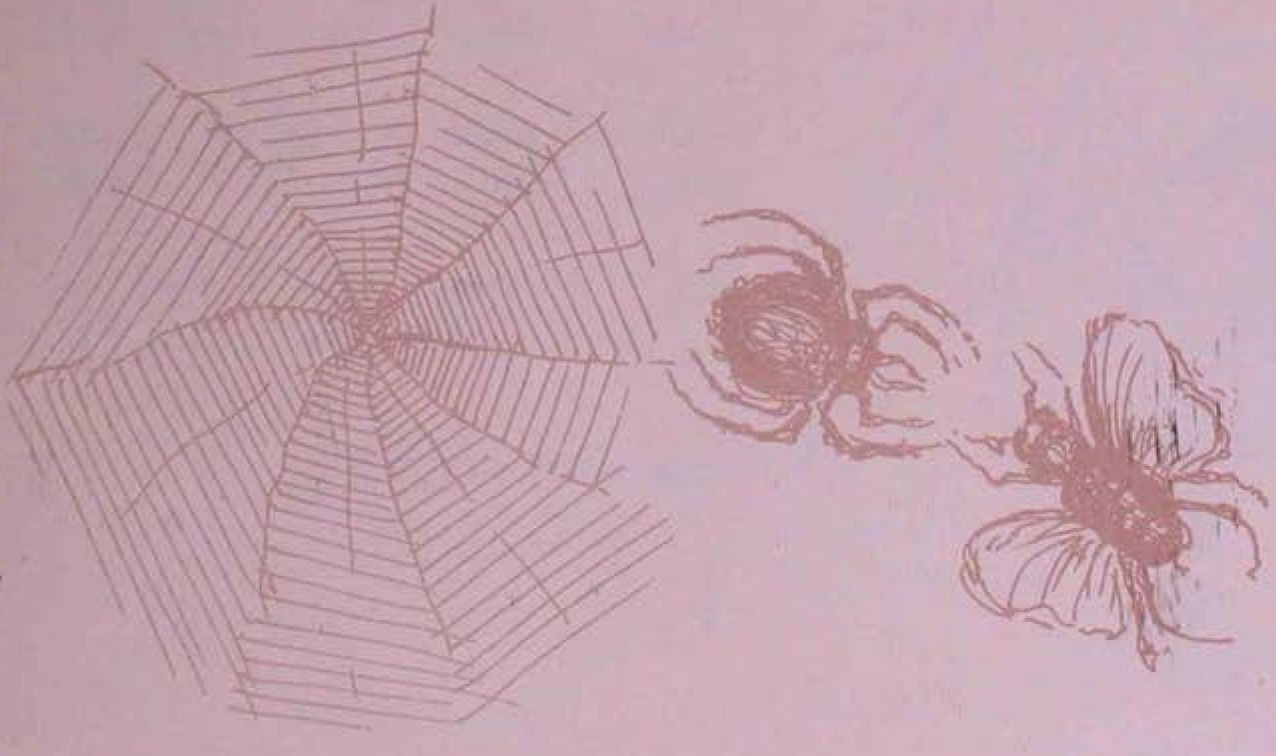

مکھی نے سُنی جب یہ خوشامد تو پسیجی
بولی کہ نہیں آپ سے مجکو کوئی کھٹکا

انکار کی عادت کو سمجھتی ہوں بُرا میں
سچ یہ ہے کہ دل توڑنا اچھا نہیں ہوتا

یہ بات کہی اور اُڑی اپنی جگہ سے
پاس آئی تو مکڑے نے اچھل کر اسے پکڑا

بھوکا تھا کئی روز سے اب ہاتھ جو آئی
آرام سے گھر بیٹھ کے مکھی کو اڑایا

(ماخوذ)

हमदर्दी

ہمدردی

टेहनी पे किसी शजर[1] की तन्हा[2]
बुलबुल था कोई उदास बैठा

कहता था कि रात सर पे आई
उड़ने चुगने में दिन गुज़ारा

पहूँचूँ किस तरह आशियाँ[3] तक
हर चीज़ पे छा गया अँधेरा

सुन कर बुलबुल की आहो-ज़ारी[4]
जुगनू कोई पास ही से बोला

हाज़िर हूँ मदद को जानो-दिल से
कीड़ा हूँ अगरचि मैं ज़रा-सा

क्या ग़म है जो रात है अंधेरी
मैं राह में रोशनी करूंगा

अल्लाह ने दी है मुझको मिशअल[6]
चमका के मुझे दिया बनाया

हैं लोग वही जहाँ में अच्छे
आते हैं जो काम दूसरों के

(मुल्य विचार विल्यम कॉपर)

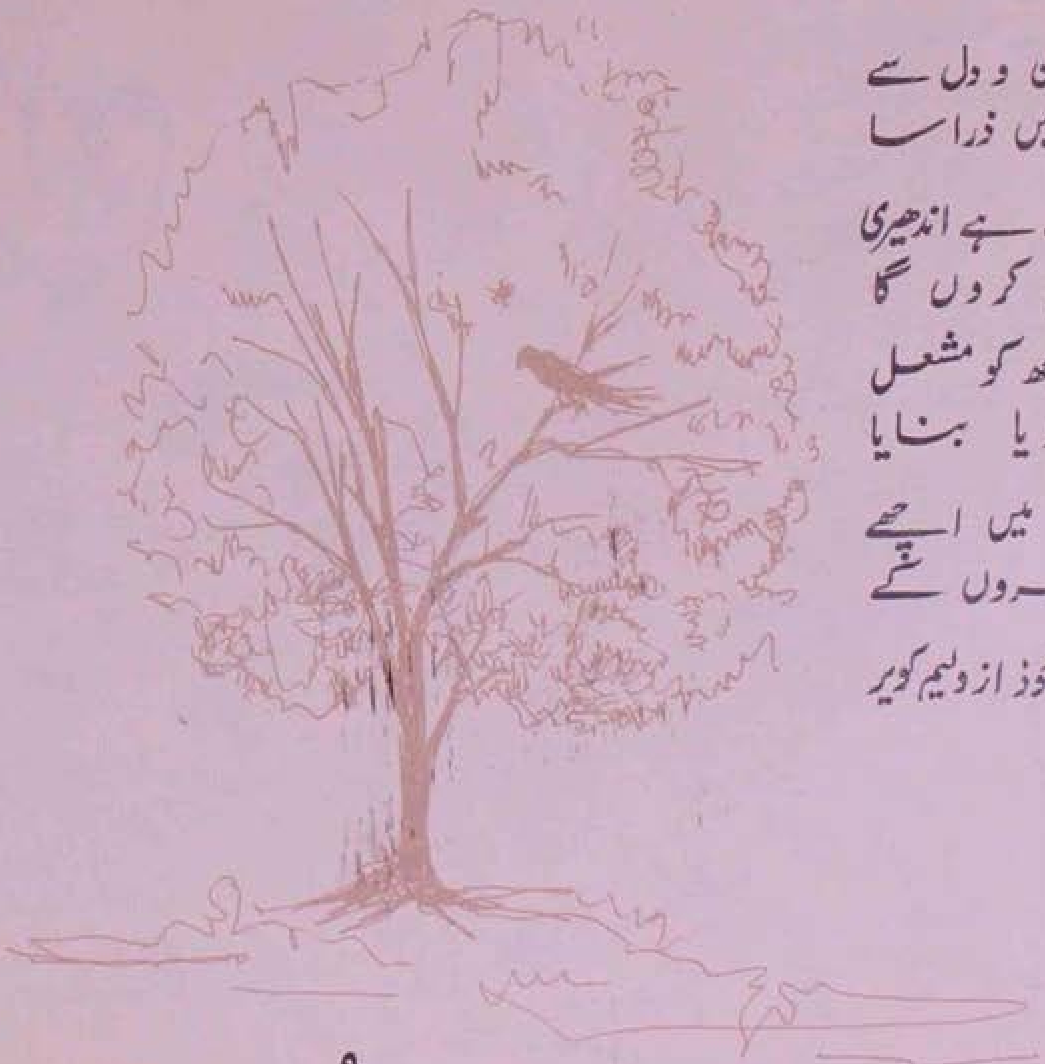

ٹہنی پہ کسی شجر کی تنہا
بلبل تھا کوئی اداس بیٹھا

کہتا تھا کہ رات سر پہ آئی
اڑنے چگنے میں دن گزرا

پہنچوں کس طرح آشیاں تک
ہر چیز پہ چھا گیا اندھیرا

سن کر بلبل کی آہ و زاری
جگنو کوئی پاس ہی سے بولا

حاضر ہوں مدد کو جان و دل سے
کیڑا ہوں اگرچہ میں ذرا سا

کیا غم ہے جو رات ہے اندھیری
میں راہ میں روشنی کروں گا

اللہ نے دی ہے مجھ کو مشعل
چمکا کے مجھے دیا بنایا

ہیں لوگ وہی جہاں میں اچھے
آتے ہیں جو کام دوسروں کے

ماخوذ از ولیم کوپر

एक गाय और बकरी

इक चरागाह हरी भरी थी कहीं
थी सरापा[1] बहार जिस की ज़मीं

क्या समां उस बहार का हो बयाँ[2]
हर तरफ़ साफ़ नद्दियाँ थीं रवाँ

थे अनारों के बेशुमार दरख़्त
और पीपल के सायादार दरख़्त

ठन्डी-ठन्डी हवायें आती थीं
ताएरों[3] की सदाएँ आती थीं

किसी नद्दी के पास इक बकरी
चरते-चरते कहीं से आ निकली

जब ठहर कर इधर-उधर देखा
पास इक गाय को खड़े पाया

पहले झुक कर उसे सलाम किया
फिर सलीक़े से यूँ कलाम[4] किया

क्यूँ बड़ी बी! मिजाज़ कैसे हैं!
गाय बोली कि ख़ैर अच्छे हैं

कट रही है बुरी भली अपनी
है मुसीबत में ज़िन्दगी अपनी

ایک گائے اور بکری

اِک چراگاہ ہری بھری تھی کہیں
تھی سراپا بہار جس کی زمیں

کیا سماں اس بہار کا ہو بیاں
ہر طرف صاف ندیاں تھیں رواں

تھے اناروں کے بے شمار درخت
اور پیپل کے سایہ دار درخت

ٹھنڈی ٹھنڈی ہوائیں آتی تھیں
طائروں کی صدائیں آتی تھیں

کسی ندی کے پاس اِک بکری
چرتے چرتے کہیں سے آ نکلی

جب ٹھہر کر اِدھر اُدھر دیکھا
پاس اِک گائے کو کھڑے پایا

پہلے جھک کر اسے سلام کیا
پھر سلیقے سے یوں کلام کیا

کیوں بڑی بی! مزاج کیسے ہیں
گائے بولی کہ خیر اچھے ہیں

کٹ رہی ہے بُری بھلی اپنی
ہے مصیبت میں زندگی اپنی

जान पर आ बनी है क्या कहिये!
अपनी क़िस्मत बुरी है, क्या कहिये!

देखती हूँ ख़ुदा की शान को मैं
रो रही हूं बुरों की जान को मैं

ज़ोर चलता नहीं ग़रीबों का
पेश[5] आया लिखा नसीबों का

आदमी से कोई भला न करे
उस से पाला पड़े, ख़ुदा न करे!

दूध कम दूँ तो बुड़बुड़ाना है
हूँ जो दुबली तो बेच खाता है

جان پر آ بنی ہے کیا کہیے
اپنی قسمت بری ہے کیا کہیے

دیکھتی ہوں خُدا کی شان کو میں
رو رہی ہوں بُروں کی جان کو میں

زور چلتا نہیں غریبوں کا
پیش آیا لکھا نصیبوں کا

آدمی سے کوئی بھلا نہ کرے
اس سے پالا پڑے خدا نہ کرے

دودھ کم دوں تو بڑ بڑاتا ہے
ہوں جو دُبلی تو بیچ کھاتا ہے

हतकन्डों से ग़ुलाम करता है!
किन फ़रेबों से राम करता है!

उसके बच्चों को पालती हूं मैं
दूध से जान डालती हूँ मैं

बदले नेकी के ये बुराई है
मेरे अल्लाह! तिरी दुहाई है!!!

सुन के बकरी यह माजरा सारा
बोली, ऐसा गिला[6] नहीं अच्छा

बात सच्ची है बेमज़ा लगती
मैं कहूंगी मगर ख़ुदा लगती

ہتھکنڈوں سے غلام کرتا ہے
کن فریبوں سے رام کرتا ہے

اس کے بچوں کو پالتی ہوں میں
دودھ سے جان ڈالتی ہوں میں

بدلے نیکی کے یہ بُرائی ہے
میرے اللہ! تری دہائی ہے

سُن کے بکری یہ ماجرا سارا
بولی ایسا گِلہ نہیں اچھا

بات سچی ہے بے مزا لگتی
میں کہوں گی مگر خدا لگتی

यह चरागह, यह ठन्डी-ठन्डी हवा
यह हरी घास और यह साया

ऐसी ख़ुशियां हमें नसीब कहाँ
यह कहाँ, बेज़बाँ ग़रीब कहाँ!

ये मज़े आदमी के दम से हैं
लुत्फ़ सारे इसी के दम से हैं

इस के दम से है अपनी आबादी
क़ैद हमको भली, कि आज़ादी?

सौ तरह का बनों में है खटका
वाँ की गुज़रान[7] से बचाये ख़ुदा

हम पे एहसान है बड़ा उसका
हमको ज़ेबा[8] नहीं गिला उसका

क़द्र आराम की अगर समझो
आदमी का कभी गिला न करो

गाय सुनकर ये बात शर्माई
आदमी के गिले से पछताई

दिल में परखा भला बुरा उसने
और कुछ सोच कर कहा उसने

यूँ तो छोटी है ज़ात बकरी की
दिल को लगती है बात बकरी की!

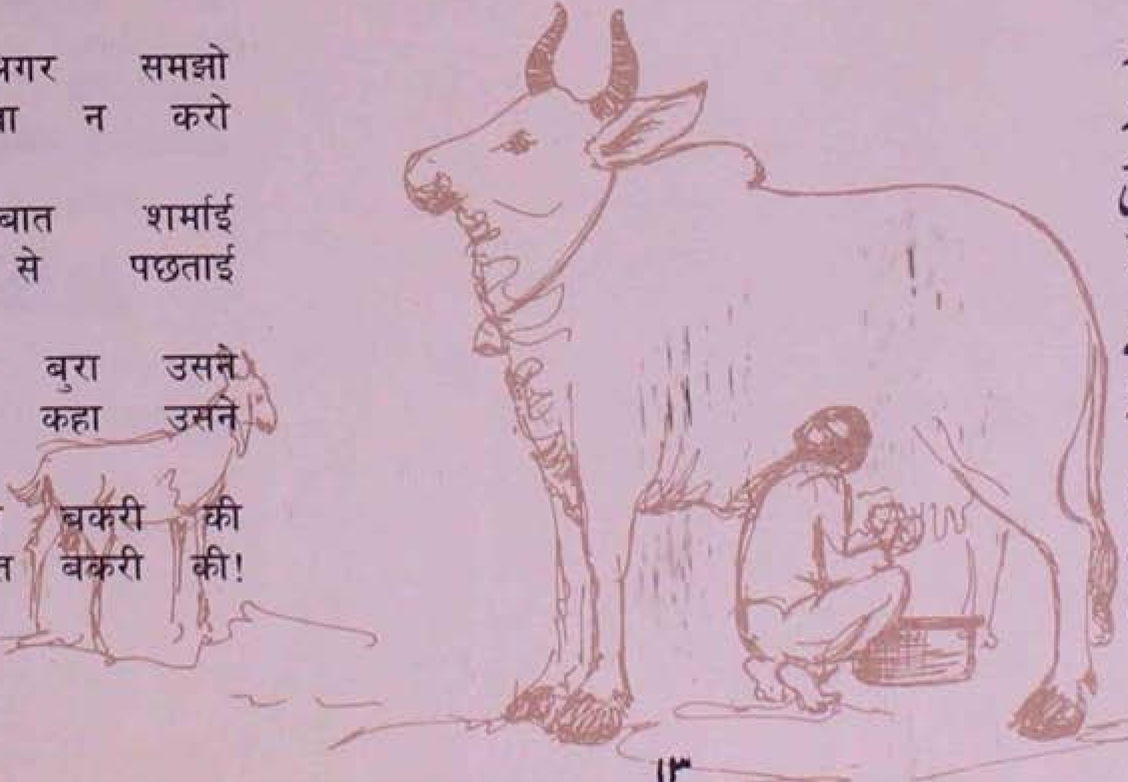

یہ چراگہ یہ ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا
یہ ہری گھاس اور یہ سایا

ایسی خوشیاں ہمیں نصیب کہاں
یہ کہاں، بے زباں غریب کہاں

یہ مزے آدمی کے دم سے ہیں
لطف سارے اسی کے دم سے ہیں

اس کے دم سے ہے اپنی آبادی
قید ہم کو بھلی کہ آزادی

سو طرح کا بنوں میں ہے کھٹکا
واں کی گزران سے بچائے خدا

ہم پہ احسان ہے بڑا اس کا
ہم کو زیبا نہیں گلہ اس کا

قدر آرام کی اگر سمجھو
آدمی کا کبھی گلہ نہ کرو

گائے سن کر یہ بات شرمائی
آدمی کے گلے سے پچھتائی

دل میں پرکھا بھلا برا اس نے
اور کچھ سوچ کر کہا اس نے

یوں تو چھوٹی ہے ذات بکری کی
دل کو لگتی ہے بات بکری کی
(ماخوذ)

ماں کا خواب

میں سوئی جو اک شب تو دیکھا یہ خواب
بڑھا اور جس سے مرا اضطراب

یہ دیکھا کہ میں جا رہی ہوں کہیں
اندھیرا ہے اور راہ ملتی نہیں

لرزتا تھا ڈر سے مرا بال بال
قدم کا تھا دہشت سے اٹھنا محال

جو کچھ حوصلہ پا کے آگے بڑھی
تو دیکھا قطار ایک لڑکوں کی تھی

زمرد سی پوشاک پہنے ہوئے
دیئے سب کے ہاتھوں میں جلتے ہوئے

وہ چپ چاپ تھے آگے پیچھے رواں
خدا جانے جانا تھا ان کو کہاں

اسی سوچ میں تھی کہ میرا پسر
مجھے اس جماعت میں آیا نظر

माँ का ख़्वाब

मैं सोई जो इक शब[1] तो देखा ये ख़्वाब
बढ़ा और जिससे मिरा इज़्तिराब[2]

ये देखा कि मैं जा रही हूँ कहीं
अंधेरा है और राह मिलती नहीं

लरज़ता था डर से मिरा बाल-बाल
क़दम का था देहशत[3] से उठना मुहाल[4]

जो कुछ हौसला पा के आगे बढ़ी
तो देखा क़तार[5] एक लड़कों की थी

ज़मर्रुद[6] सी पोशाक पहने हुए
दिये[7] सब के हाथों में जलते हुए

वह चुपचाप थे आगे पीछे रवाँ[8]
ख़ुदा जाने जाना था उनको कहाँ

इसी सोच में थी कि मेरा पिसर[9]
मझे उस जमाअत[10] में आया नज़र

वो पीछे था और तेज़ चलता न था
दिया उसके हाथों में जलता न था

कहा मैं ने पहचान कर मेरी जाँ!
मुझे छोड़ कर आ गये तुम कहाँ?

जुदाई में रहती हूँ मैं बेक़रार
पिरोती हूं हर रोज़ अश्कों[11] के हार

न परवाह हमारी ज़रा तुम ने की
गये छोड, अच्छी वफ़ा[12] तुम ने की

जो बच्चे ने देखा मिरा पेचो-ताब[13]
दिया उसने मुँह फेर कर यूँ जवाब

रूलाती है तुझको जुदाई मिरी
नहीं इस में कुछ भी भलाई मिरी

यह कहकर वो कुछ देर तक चुप रहा
दिया फिर दिखा कर ये कहने लगा

समझती है तू हो गया क्या इसे?
तिरे आंसुओं ने बुझाया इसे!

(मूल्य विचार दूसरी भाषा के)

وہ پیچھے تھا اور تیز چلتا نہ تھا
دیا اس کے ہاتھوں میں جلتا نہ تھا

کہا میں نے پہچان کر میری جاں
مجھے چھوڑ کر آ گئے تم کہاں

جدائی میں رہتی ہوں میں بے قرار
پروتی ہوں ہر روز اشکوں کے ہار

نہ پروا ہماری ذرا تم نے کی
گئے چھوڑ اچھی وفا تم نے کی

جو بچے نے دیکھا مرا پیچ و تاب
دیا اس نے منہ پھیر کر یوں جواب

رلاتی ہے تجھ کو جدائی مری
نہیں اس میں کچھ بھی بھلائی مری

یہ کہہ کر وہ کچھ دیر تک چپ رہا
دیا پھر دکھا کر یہ کہنے لگا

سمجھتی ہے تو ہو گیا کیا اسے؟
ترے آنسوؤں نے بجھایا اسے

(ماخوذ)

परिन्दे की फ़रियाद

پرندے کی فریاد

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना
वह बाग़ की बहारें वह सब का चेहचहाना

आज़ादियाँ कहाँ वो अब अपने घोंसले की
अपनी ख़ुशी से आना, अपनी ख़ुशी से जाना

लगती है चोट दिल पर, आता है याद जिस दम
शबनम के आँसुओं पर कलियों का मुस्कुराना

वो प्यारी-प्यारी सूरत, वह कामनी-सी मूरत
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना

आती नहीं सदायें[1] उसकी मिरे क़फ़स[2] में
होती मिरी रिहाई ए काश मेरे बस में

क्या बदनसीब हूँ मैं घर को तरस रहा हूँ
साथी तो हैं वतन में, मैं क़ैद में पड़ा हूँ

आई बहार कलियाँ फूलों की हँस रही हैं
मैं इस अंधेरे घर में क़िस्मत को रो रहा हूँ

इस क़ैद का इलाही[3] दुखड़ा किसे सुनाऊँ
डर है यहीं क़फ़स में, मैं ग़म से मर न जाऊँ

जब से चमन छुटा है यह हाल हो गया है
दिल ग़म को खा रहा है, ग़म दिल को खा रहा है

गाना इसे समझ कर ख़ुश हों न सुनने वाले
दुखे हुये दिलों की फ़रियाद ये सदा है

आज़ाद मुझको कर दे ओ क़ैद करने वाले
मैं बेज़बाँ हूँ क़ैदी तू छोड़ कर दुआ ले!

آتا ہے یاد مجھ کو گذرا ہوا زمانا
وہ باغ کی بہاریں وہ سب کا چہچہانا

آزادیاں کہاں وہ اب اپنے گھونسلے کی
اپنی خوشی سے آنا اپنی خوشی سے جانا

لگتی ہے چوٹ دل پر آتا ہے یاد جس دم
شبنم کے آنسوؤں پر کلیوں کا مسکرانا

وہ پیاری پیاری صورت وہ کامنی سی مورت
آباد جس کے دم سے تھا میرا آشیانا

آتی نہیں صدائیں اس کی مرے قفس میں
ہوتی مری رہائی اے کاش میرے بس میں

کیا بدنصیب ہوں میں گھر کو ترس رہا ہوں
ساتھی تو ہیں وطن میں، میں قید میں پڑا ہوں

آئی بہار کلیاں پھولوں کی ہنس رہی ہیں
میں اس اندھیرے گھر میں قسمت کو رو رہا ہوں

اس قید کا الٰہی دکھڑا کسے سناؤں
ڈر ہے یہیں قفس میں، میں غم سے مر نہ جاؤں

جب سے چمن چھٹا ہے یہ حال ہو گیا ہے
دل غم کو کھا رہا ہے، غم دل کو کھا رہا ہے

گانا اسے سمجھ کر خوش ہوں نہ سننے والے
دکھے ہوئے دلوں کی فریاد یہ صدا ہے

آزاد مجھ کو کر دے او قید کرنے والے
میں بے زباں ہوں قیدی، تو چھوڑ کر دعا لے

एक पहाड़ और गिलेहरी

ایک پہاڑ اور گلہری

कोई पहाड़ ये कहता था इक गिलेहरी से
तुझे हो शर्म, तो पानी में जाके डूब मरे

ज़रा सी चीज़ है, इस पर गुरूर! क्या कहना!
ये अक़्ल और ये समझ, ये शऊर[1] क्या कहना!

ख़ुदा की शान है नाचीज़ चीज़ बन बैठें
जो बेशऊर हों यूं बातमीज़ बन बैठें

तिरी बिसात[2] है क्या मेरी शान के आगे?
ज़मीं है पस्त[3] मेरी आन बान के आगे

जो बात मुझमें है तुझको वह है नसीब कहाँ
भला पहाड़ कहाँ, जानवर ग़रीब कहाँ!

कहा ये सुनके गिलेहरी ने, मुँह संभाल ज़रा
यह कच्ची बातें हैं दिल से इन्हें निकाल ज़रा

کوئی پہاڑ یہ کہتا تھا اِک گلہری سے
تجھے ہو شرم تو پانی میں جا کے ڈوب مرے

ذرا سی چیز ہے، اس پر غرور! کیا کہنا
یہ عقل اور یہ سمجھ، یہ شعور! کیا کہنا

خدا کی شان ہے ناچیز چیز بن بیٹھیں
جو بے شعور ہوں یوں باتمیز بن بیٹھیں

تری بساط ہے کیا میری شان کے آگے
زمیں ہے پست مری آن بان کے آگے

جو بات مجھ میں ہے، تجھ کو وہ ہے نصیب کہاں
بھلا پہاڑ کہاں، جانور غریب کہاں

کہا یہ سن کے گلہری نے مُنہ سنبھال ذرا
یہ کچی باتیں ہیں دل سے انھیں نکال ذرا

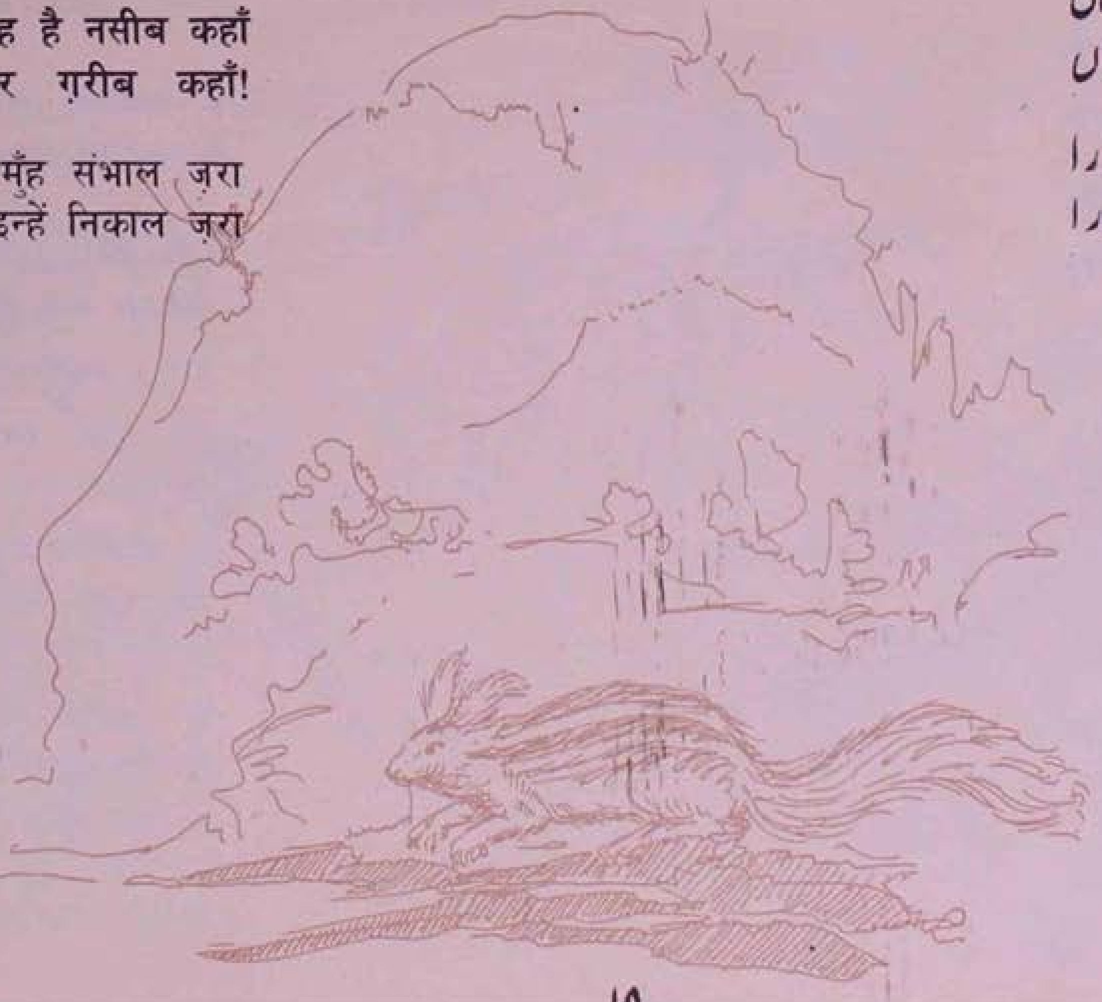

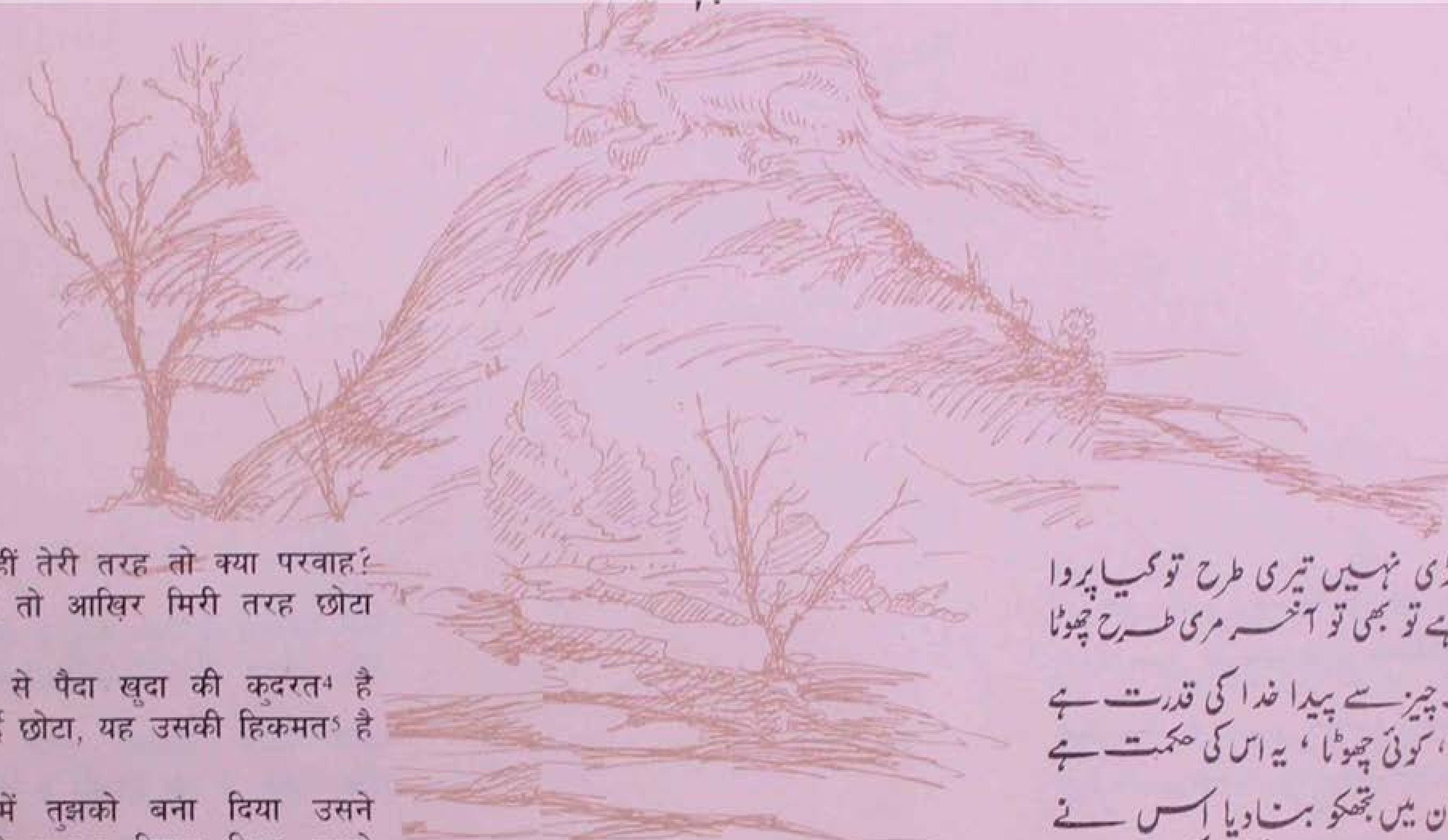

जो मैं बड़ी नहीं तेरी तरह तो क्या परवाह?
नहीं है तू भी तो आख़िर मिरी तरह छोटा

हर एक चीज़ से पैदा ख़ुदा की क़ुदरत[4] है
कोई बड़ा, कोई छोटा, यह उसकी हिकमत[5] है

बड़ा जहान में तुझको बना दिया उसने
मुझे दरख़्त पे चढ़ना सिखा दिया उसने

क़दम उठाने की ताक़त नहीं ज़रा तुझ में
निरी बड़ाई है! ख़ूबी है और क्या तुझ में

जो तू बड़ा है तो मुझ सा हुनर दिखा मुझको
ये छालिया ही ज़रा तोड़ कर दिखा मुझको

नहीं है चीज़ निकम्मी कोई ज़माने में
कोई बुरा नहीं क़ुदरत के कारख़ाने में

(मूल्य विचार एमरसन के)

جو میں بڑی نہیں تیری طرح تو کیا پروا
نہیں ہے تو بھی تو آخر مری طرح چھوٹا

ہر ایک چیز سے پیدا خدا کی قدرت ہے
کوئی بڑا، کوئی چھوٹا، یہ اس کی حکمت ہے

بڑا جہان میں تجھکو بنا دیا اس نے
مجھے درخت پہ چڑھنا سکھا دیا اس نے

قدم اٹھانے کی طاقت نہیں ذرا تجھ میں
نری بڑائی ہے، خوبی ہے اور کیا تجھ میں

جو تو بڑا ہے تو مجھ سا ہنر دکھا مجھ کو
یہ چھالیا ہی ذرا توڑ کر دکھا مجھ کو

نہیں ہے چیز نکمی کوئی زمانے میں
کوئی برا نہیں قدرت کے کارخانے میں

(ماخوذ از ایمرسن)

हिन्दोस्तानी बच्चों का कौमी गीत

चिश्ती ने जिस ज़मीं में पैग़ामें-हक़[1] सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत[2] का गीत गाया
तातारियों[3] ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियों[4] से दश्ते-अरब[5] छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था
सारे जहाँ को जिसने इल्मो-हुनर[6] दिया था
मिट्टी को जिसकी हक़[7] ने ज़र[8] का असर दिया था
तुर्कों[9] का जिसने दामन हीरों से भर दिया था
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

टूटे थे जो सितारे फारस के आसमां से
फिर ताब[10] दे के जिसने चमकाये कहकशाँ[11] से
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकाँ से
मीरे-अरब[12] को आई ठण्डी हवा जहाँ से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

ہندوستانی بچوں کا قومی گیت

چشتیؒ نے جس زمیں میں پیغامِ حق سُنایا
نانک نے جس چمن میں وحدت کا گیت گایا
تاتاریوں نے جس کو اپنا وطن بنایا
جس نے حجازیوں سے دشتِ عرب چھڑایا
میرا وطن وہی ہے، میرا وطن وہی ہے

یونانیوں کو جس نے حیران کر دیا تھا
سارے جہاں کو جس نے علم و ہنر دیا تھا
مٹی کو جس کی حق نے زر کا اثر دیا تھا
ترکوں کا جس نے دامن ہیروں سے بھر دیا تھا
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

ٹوٹے تھے جو ستارے فارس کے آسماں سے
پھر تاب دے کے جس نے چمکائے کہکشاں سے
وحدت کی لے سُنی تھی دنیا نے جس مکاں سے
میرِ عرب کو آئی ٹھنڈی ہوا جہاں سے
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

بندے کلیمؑ جس کے، پربت جہاں کا سینا
نوحؑ نبی کا آ کر ٹھہرا جہاں سفینا
رفعت ہے جس زمیں کی بامِ فلک کا زینا
جنت کی زندگی ہے جس کی فضا میں جینا
میرا وطن وہی ہے میرا وطن وہی ہے

वन्दे कालीम जिसके, परबत जहाँ के सीना
नहे-नवी[13] का आकर ठहरा जहाँ सफ़ीना[14]
रिफअत[15] है जिस ज़मीं की बामे-फ़लक का ज़ीना
जन्नत की ज़िन्दगी है जिसकी फ़ज़ा[17] में जीना
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

तरानाए–हिन्दी

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबलें हैं इसकी ये गुलसिताँ हमारा

गुरबत[1] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का
वो संतरी हमारा, वो पास्बाँ[2] हमारा

गोदी में खेलती हैं इस की हज़ारों नदियां
गुलशन है, जिनके दम से रश्के-जिनाँ[3] हमारा

ऐ आबे-रोदे-गंगा[4]! वो दिन हैं याद तुझको?
उतरा तिरे किनारे जब कारवाँ हमारा

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा

ترانۂ ہندی

سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا
ہم بلبلیں ہیں اس کی یہ گلستاں ہمارا

غربت میں ہوں اگر ہم، رہتا ہے دل وطن میں
سمجھو وہیں ہمیں بھی دل ہو جہاں ہمارا

پربت وہ سب سے اونچا ہمسایہ آسماں کا
وہ سنتری ہمارا وہ پاسباں ہمارا

گودی میں کھیلتی ہیں اس کی ہزاروں ندیاں
گلشن ہے جن کے دم سے رشکِ جناں ہمارا

اے آبِ رودِ گنگا وہ دن ہیں یاد تجھکو
اُترا ترے کنارے جب کارواں ہمارا

مذہب نہیں سکھاتا آپس میں بیر رکھنا
ہندی ہیں ہم وطن ہے ہندوستاں ہمارا

یونان و مصر و روما سب مٹ گئے جہاں سے
اب تک مگر ہے باقی نام و نشاں ہمارا

کچھ بات ہے کہ ہستی مٹتی نہیں ہماری
صدیوں رہا ہے دشمن دورِ زماں ہمارا

اقبالؔ! کوئی محرم اپنا نہیں جہاں میں
معلوم کیا کسی کو دردِ نہاں ہمارا

यूनानो-मिस्रो-रोमा सब मिट गये जहां से
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशाँ हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़माँ[5] हमारा

इक़बाल कोई महरम[6] अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहाँ[7] हमारा

तरानए – हिन्दी

1. परदेश में होना 2. चौकीदार 3. स्वर्ग जिससे ईर्ष्या करे 4. ऐ गंगा के पानी 5. ज़माना 6. जानकार 7. आंतरिक पीड़ा.

हिन्दुस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत

1. भगवान का संदेश 2. एकता 3. तातार के रहने वाले 4. अरब के रहने वाले 5. अरब का रेगिस्तान 6. शिक्षा और कला 7. ख़ुदा 8. सोना 9. तुर्की के रहने वाले 10. चमक 11. सितारों के झुरमुट 12. पैगम्बर मोहम्मद साहब ने एक दिन कहा था कि मुझे हिन्दोस्तान की तरफ़ से ठण्डी हवा आती महसूस होती है. इसी तरफ़ इशारा है. 13. मुसलमानों के वे अवतार जिनके ज़माने के प्रलय आया था.14. बड़ी नाव 15. ऊँचाई 16. आसमान का छज्जा 17. वातावरण

माँ का ख़्वाब

1. रात 2. बेचैनी 3. भय 4. कठिन 5. पंक्ति 6. फ़ीरोज़ी रंग 7. दीपक 8. जाते हुए 9. बेटा 10. समूह 11. आँसू 12. निर्वाह 13. बेचैनी.

एक मकड़ा और मक्खी

1. मौजूद 2. समझदार 3. स्थान.

परिन्दे की फरियाद

1. आवाज़ें 2. पिंजरा 1. भगवान.

एक गाय और बकरी

1. सिर से पैर तक 2. वर्णन 3. पक्षी 4. बात करना 5. सामने आया 6. शिकायत 7. रहने से 8. उचित.

हमदर्दी

1. पेड़ 2. अकेला 3. घोंसला 4. रोना 5. मशाल.

बच्चे की दुआ

1. ओंठ 2. इच्छा 3. दीपक 4. भगवान 5. सुन्दरता 6. भगवान 7. शिक्षा 8. बूढ़ों।

पहाड़ और गलेहरी

1. समझ 2. हेसियत 3. निचले दर्जे की 4. शक्ति 5. सूझ-बूझ 6 दुनिया.

कलीम = मुसलमानों के पैग़म्बर, हज़रत मूसा

लिप्यांतर के बारे में

उर्दू में छंद की जरूरत की वजह से कुछ शब्दों को खींच कर और कुछ को कम करके पढ़ा जाता है। जैसा पढ़ा जाता है हमने वैसा ही लिखा है। मिसालें इस तरह हैं :–

तेरी = तिरी/मेरी = मिरी/वह = वो यह = ये/कोई = कुई/मेरा = मिरा/ दीजियेगा = दीजेगा।

एक = इक/राह = राह/नदी = नद्दी/यूँही = यूंही

अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ भोपाल मध्य प्रदेश शासन द्वारा इक़बाल की याद में स्थापित की गई संस्था है। इस संस्था के उद्देश्य हैं इक़बाल पर शोध कार्य कराना और इक़बाल की शायरी को दूसरी भारतीय भाषाओं में छापना। यह किताब इसी सिलसिले की पहली कड़ी हैं।

ममनून हसन ख़ाँ
अध्यक्ष

علامہ اقبالؔ ادبی مرکز بھوپال مدھیہ پردیش سرکار کے ذریعے اقبالؔ کی یاد میں قایم کیا گیا ادارہ ہے۔ اس ادارے کے مقاصد میں اقبالؔ پر تحقیق کام کروانا اور دوسری ہندوستانی زبانوں میں اقبال کے کلام کو منتقل کر کے چھپوانا ہے۔ یہ کتاب اسی سلسلے کی پہلی کڑی ہے۔

ممنون حسن خاں
صدر

भूल सुधार

पृष्ठ		लाइन		
6	—	17	—	कनियाँ
12	—	9	—	बुड़बुड़ाता
12	—	11	—	हथकन्डों
20	—	4	—	कोई
22	—	1	—	कलीम
22	—	2	—	नूहे-नबी
24	—	4	—	सदियों

सचिव अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ ने एच.एस. आफसेट वर्क्स दिल्ली में छपवाकर
इक़बाल मरकज़ शीश महल भोपाल से शाया की।

रेखांकन :- प्रो. भावसार
एवं
नाएमा

اسکیچ :- پروفیسر بھاؤسار
اور
نائمہ

قیمت مجلد :
غیر مجلد :

अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ भोपाल

अल्लामा इक़बाल अदबी मरकज़ भोपाल